

21/11/24. धनावली पेशे हूँ फतावली घा अक्तोस्त
सिया जवा। अन्न वाइ धी कानलिनानां
कलवटा के कश्चिना जगाए उपातण्ड कृपिणी
धे जेगाव्या के ध्याकनप के सियावा छैत
ही कः पूकाण इमी हटा पर स्वाजि
सिया जगाही

